मगरमच्छ

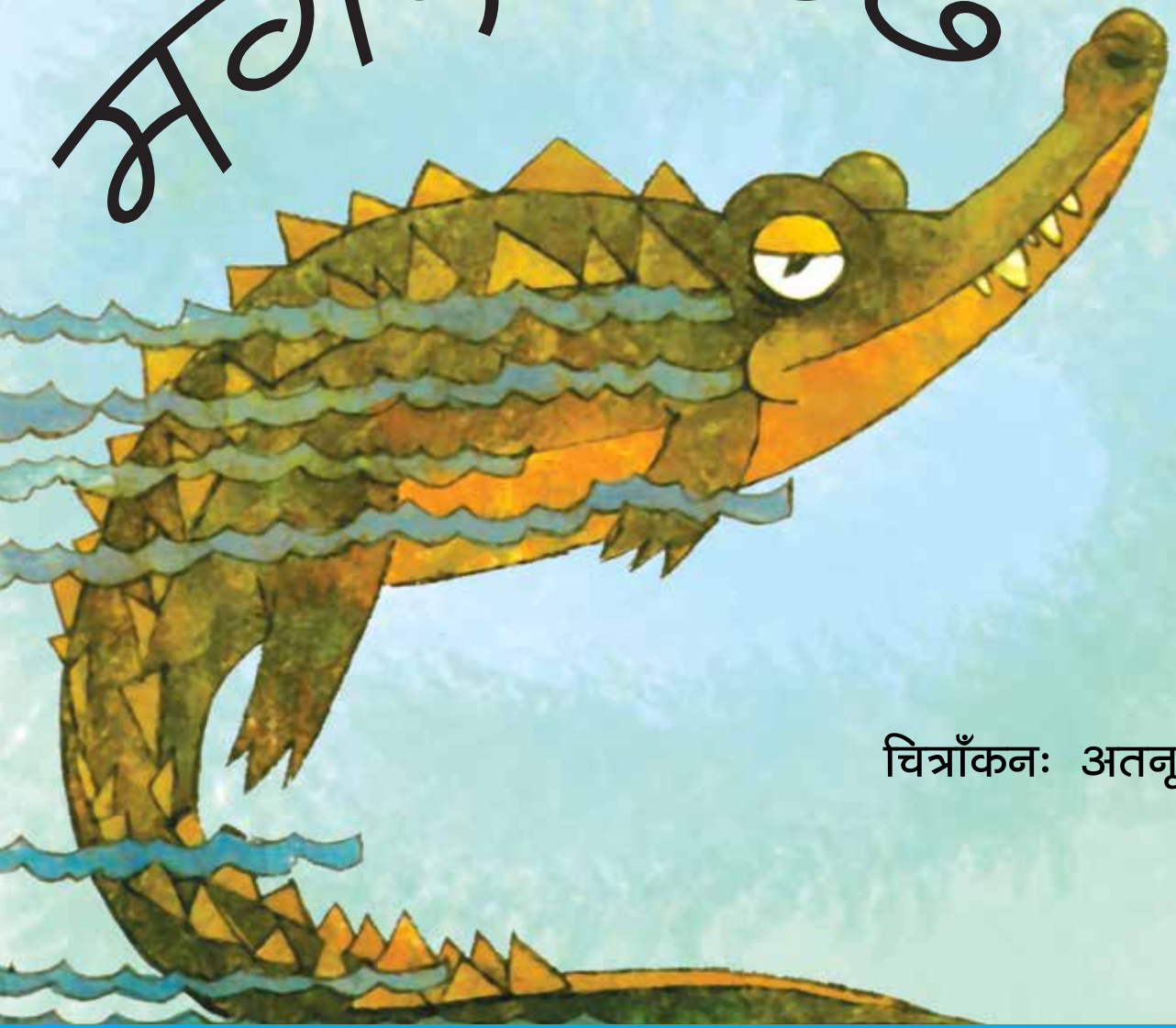

शंकर

चित्राँकनः अतनू रॉय

कथा की 300एम थिंकबुक

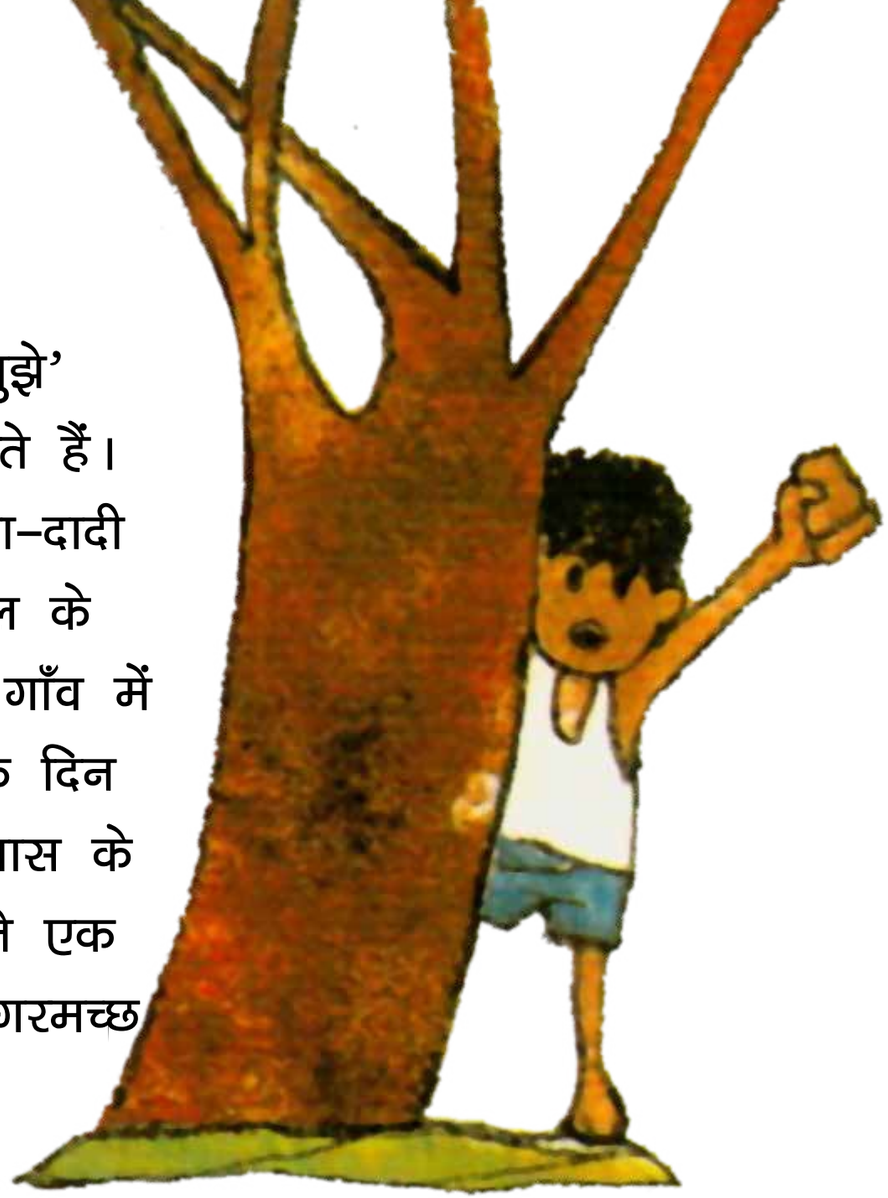

सभी मुझे 'मुझे' कहकर पुकारते हैं। मैं अपने दादा–दादी के साथ केरल के एक छोटे से गाँव में रहता हूँ। एक दिन मेरे घर के पास के पोखर में मैंने एक बहुत बड़ा मगरमच्छ देखा।

मगरमच्छ का वहाँ रहना मुझे बुरा तो नहीं लगता था पर मैं चाहता था कि वह हमारी मछलियाँ न खाए।

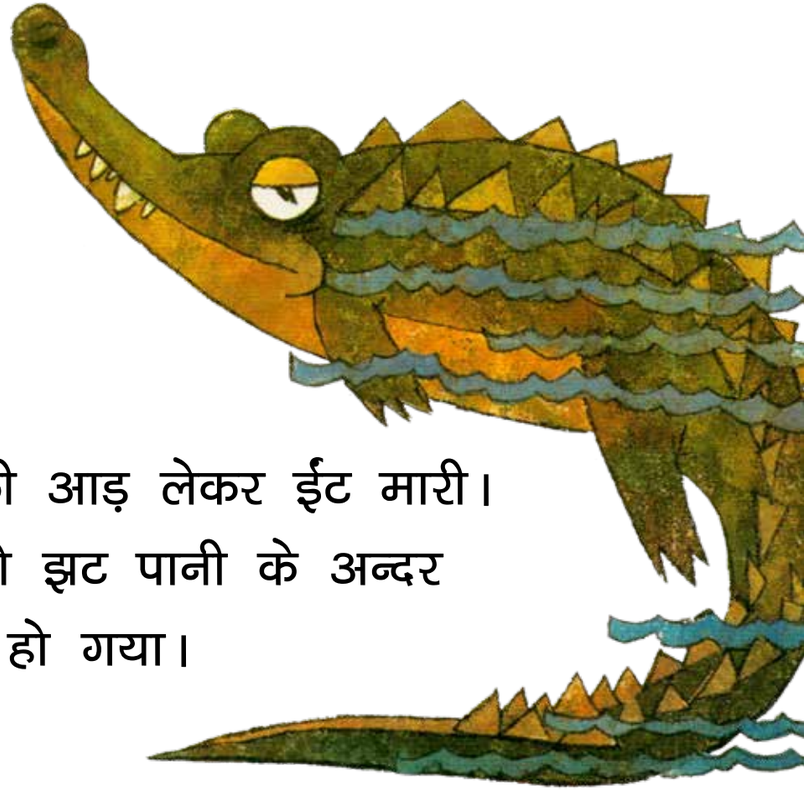

मैंने एक पेड़ की आड़ लेकर ईंट मारी। पर मगरमच्छ तो झट पानी के अन्दर अुबक कर गुम हो गया।

शायद रस्सी का कर जाए।
अपनी गोशाला में हम
मोटी लम्बी रस्सी से
गाय बाँधते हैं। पर
दादाजी ने मुझे रस्सी
लेने ही नहीं दी। फिर
वह किसी काम से
बाहर चले गए।

बस, मैंने झट रस्सी ली और पोखर पर पहुँचा। रस्सी की एक छोर मैंने पेड़ से बाँधी और दूसरी छोर पर एक बड़ा फन्दा बना दिया।

अगले दिन सुबह जल्दी उठकर मैं पोखर के पास गया। मगरमच्छ वहीं था, फन्दे में फँसा हुआ। मुझे देखकर गुस्से से मुँह खोला और मुझ पर झपटने की कोशिश की।

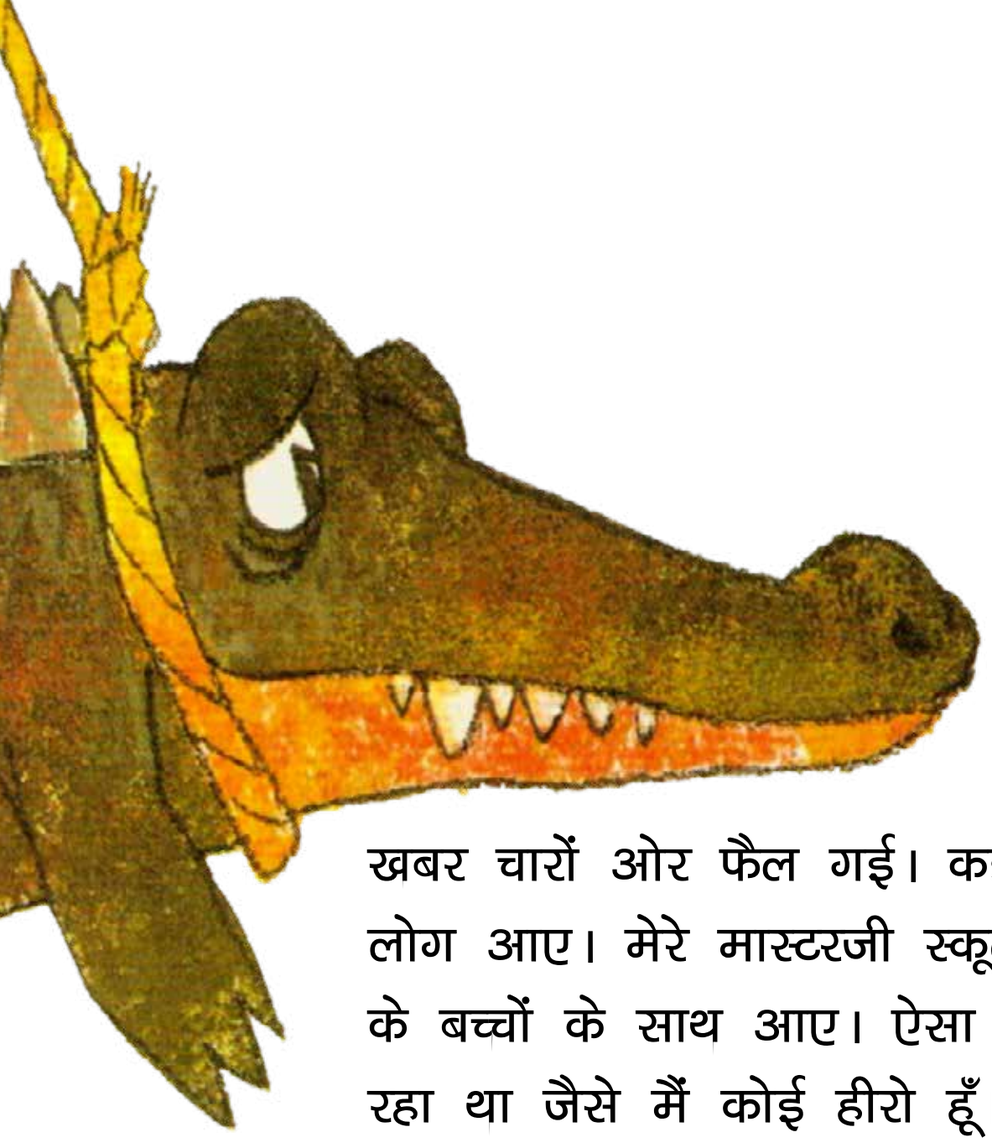

खबर चारों ओर फैल गई। कई लोग आए। मेरे मास्टरजी स्कूल के बच्चों के साथ आए। ऐसा लग रहा था जैसे मैं कोई हीरो हूँ।

भीड़ में कुछ लोग मगरमच्छ हो मारना चाहते थे। मैंने कहा कि यह तो मेरा मगरमच्छ है और मैं इसे आज़ाद करना चाहता हूँ।

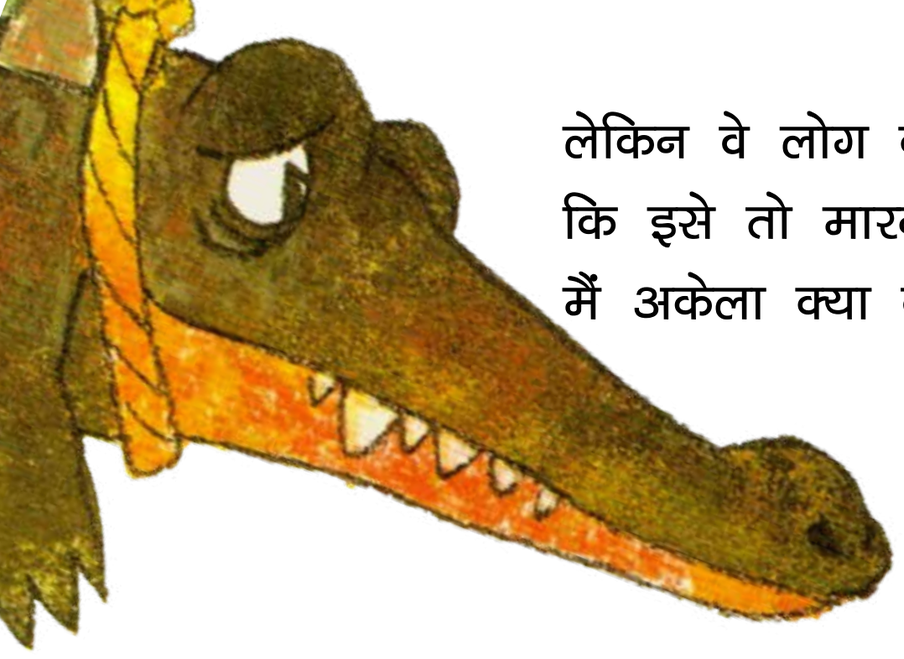

लेकिन वे लोग कह रहे थे
कि इसे तो मारना ही पड़ेगा।
मैं अकेला क्या करता?

तभी दादाजी आ गए। एक
दादाजी ही तो थे जो मेरे
मगरमच्छ को बचा सकते थे।

दादाजी ने मोटी आवाज़ में कह
दिया कि मगरमच्छ को कोई न
मारे। वह मुझसे बोले, 'राजा,
अभी, इसी वक्त इसे छोड़ दो।'

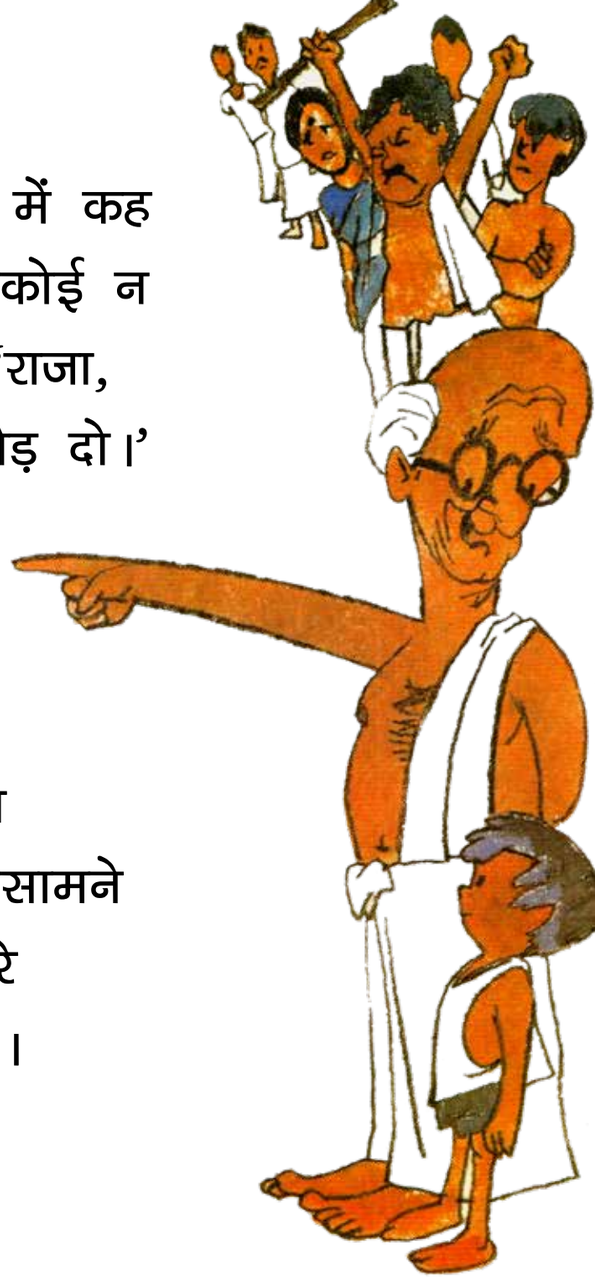

हमने तय किया कि हम
मगरमच्छ को मंदिर के सामने
वाले बड़े तालाब में दूसरे
मगरों के साथ छोड़ देंगे।

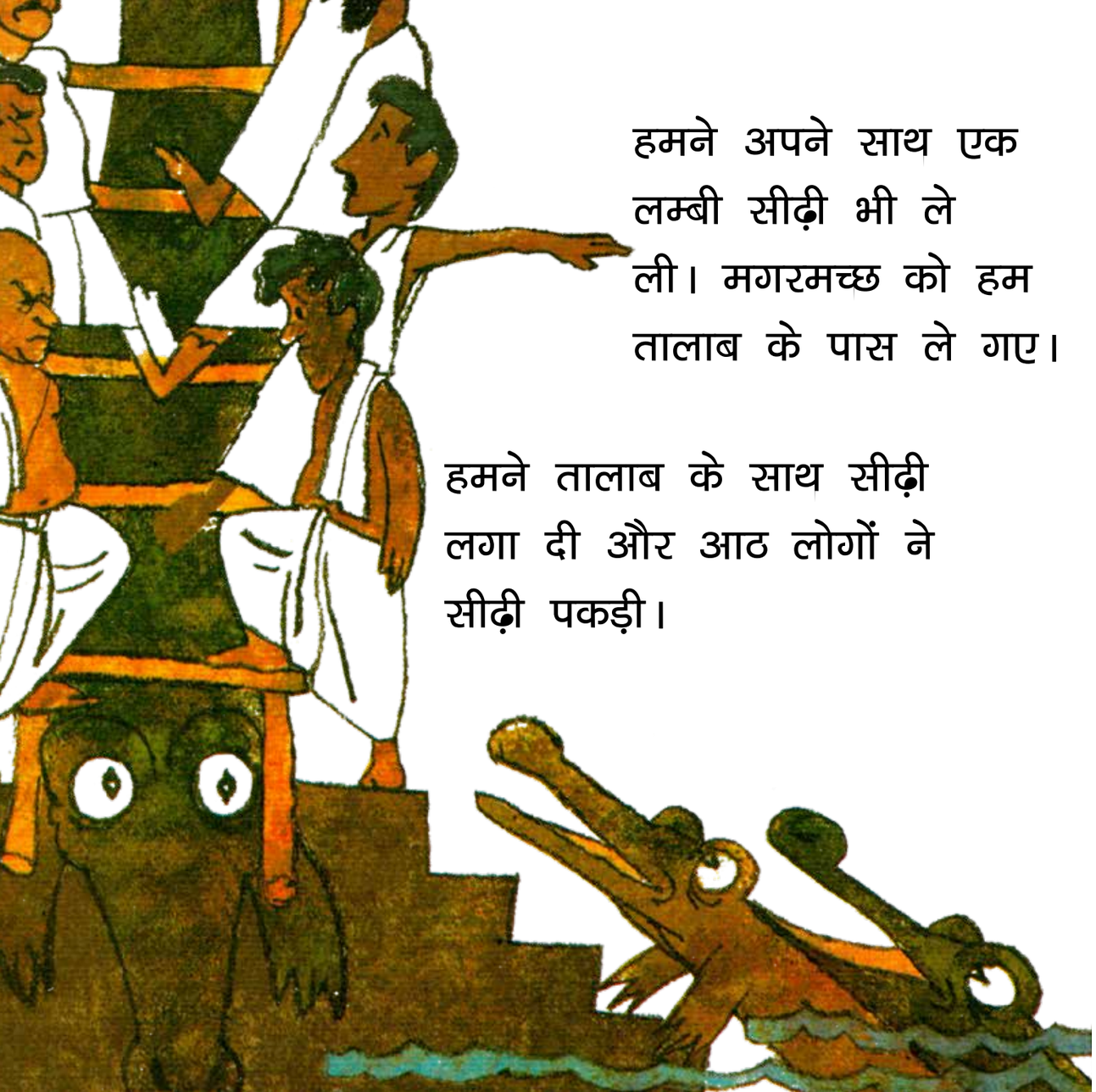

हमने अपने साथ एक लम्बी सीढ़ी भी ले ली। मगरमच्छ को हम तालाब के पास ले गए।

हमने तालाब के साथ सीढ़ी लगा दी और आठ लोगों ने सीढ़ी पकड़ी।

हमने मगरमच्छ को आहिस्ता-आहिस्ता पानी में उतार दिया। फिर हमने मगरमच्छ की रस्सी काट दी और वह पानी में तैरने लगा।

इस घटना के कुछ ही दिनों बाद मैं अपने पिछवाड़े के पोखर पर गया। वहाँ क्या देखता हूँ? मेरा मगरमच्छ वापस आ गया था और मज़े से पोखर के किनारे धूप से रहा था।

शंकर – के. शंकर पिल्लई – का जन्म केरल में हुआ था। बच्चों की किताबों के लेखक और चित्रकार – उन्हें चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट और शंकर्स इंटरनेशनल डॉल्स म्यूजियम की स्थापना के लिए सबसे ज्यादा याद किया जाता है। 1976 में उन्हें पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था।

अतनु रॉय ने बच्चों के लिए सौ से अधिक पुस्तकों का चित्रण किया है। रॉय, जो कभी इंडिया टुडे के लिए एक राजनीतिक कार्टूनिस्ट के रूप में काम करते थे, ने बुक इलस्ट्रेशन के लिए चिल्ड्रन च्वाइस अवार्ड और इलस्ट्रेशन के लिए प्ठठल सर्टिफिकेट ऑफ ऑनर जीता है।

क कथा

कथा एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त गैर–लाभकारी संस्था है जो कि शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सन् 1988 से काम कर रही है। गरीबी में रहने वाले बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने का व उनके लिए विशेष किताबें बनाने का कथा के पास लगभग 30 साल का अनुभव है।

"भारत के मुकुट पर एक शैक्षिक हीरा!" – **नाओकी शिनोहरा, उपप्रबंध निर्देशक, आईएमएफ**

"कथा का काम इस विचार से प्रेरित है कि बच्चे अपने समुदायों में स्थायी बदलाव ला सकते हैं। जैसे कि बच्चे करते हैं (कथा की किताबों में)।" – **पेपरटाइगर्स**

"कथा बच्चों के लिए नर्म दिल है। तभी तो कथा बच्चों के लिए इतनी खूबसूरत किताबें बनाती है।" – **टाइम आउट**

"कथा दुनिया भर में उन रचनात्मक संगठनों के लिए एक उदाहरण है जो शहरों के सुधार के लिए काम करते हैं।"

– **चार्ल्स लैंड्री,** *द आर्ट ऑफ़ सिटी मेकिंग*

पहला हिंदी संस्करण 2021
कृति स्वामित्व © कथा, 1994, 2021
लेखन कृति स्वामित्व © शंकर
चित्राँकन कृति स्वामित्व © कथा
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।
नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित

हमारा लक्ष्यः हर बच्चा आनंद और अर्थवत्ता के लिए पढ़ें।

कथा एक पंजीकृत आलंभकारी संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में किया गया था। कथा शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में काम करती है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रूचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना। कथा 1,00,000 से भी अधिक बच्चों के साथ काम करती है ताकि वे मजे के लिए और कक्षा स्तर पर पढ़ सकें।

ए–3 सर्वोदय एन्क्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नयी दिल्ली – 110017
दूरभाषः 4141 6600 - 4141 6624 - 4182 9998
इ–मेलः marketing@katha-org
वेबसाइटः www-katha-org | www-books-katha-org

इस किताब की बिक्री में मिली राशि का 10% बच्चों की शिक्षा के लिए कथा स्कूल को दिया जाएगा।
कथा नियमित रूप से उस लकड़ी के बदले पेड़ लगाती है, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज बनता है।

'I Love Reading' Library कथा की एक खास श्रृंखला है। यह नए और संकोची बच्चों को सहजता से पढ़ना सिखाती है। इसका पाठ्यक्रम अलग – अलग स्तर पर पढ़ने वाले बच्चों को ध्यान में रख कर बनाया गया है। यह बेहतरीन साहित्य और कला को भारत एवं दुनिया भर से एकत्रित कर बनायी गयी है।

यह किताबें गीता धर्मराजन के 'StoryPedagogy' पर आधारित हैं। यह एक खास तरह का मॉडल है जो पहले स्कूल नहीं गए हुए बच्चों के लिए बनाया गया था। बच्चों को 'TADAA' (Think, Ask, Discuss, Act and Achieve) और 'बड़े विचारों' के द्वारा यह उनमें पढ़ने की खुशी और समझने की क्षमता बढ़ता है।

Katha's Holistic Early Learning (KHEL!) लैब सरकारी, निजी और गैर – लाभकारी विद्यालयों में कार्यशालाएँ कराती है। यह ऑनलाइन चलने वाली कार्यशालाएँ हैं। इसमें शिक्षकों, विद्यालय प्रबंधकों और स्वयं सेवकों को प्रमाण पत्र भी दिया जाता है।

अधिक जानकारी के लिए 300m@katha-org पर जाएँ।

यह सभी आई.एल.आर किताबें हैं

आनंद और समझने के लिए पढ़ो

FOR OUR BOOKS

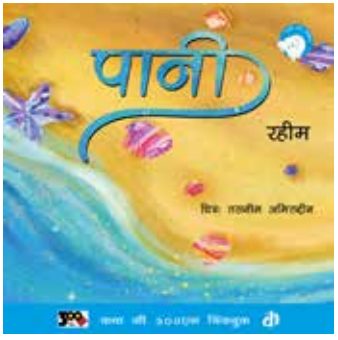

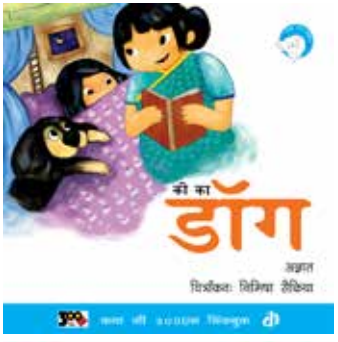

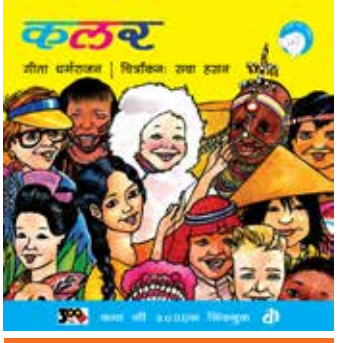

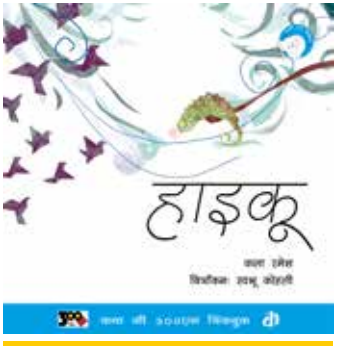

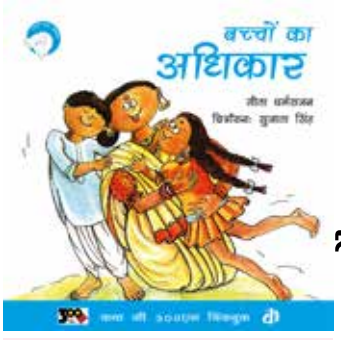

www.books.katha.org

"[Katha]...a special and unique moment in Indian Publishing history."

— The iconic The Economic Times

for children
a katha book
ISBN 978-93-88284-81-3
www.katha.org
₹ xxx

इसकी श्रृंखला में